चन्द्र ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित चन्द्र ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय सोमवार के दिन संध्याकाल से आरम्भ करना चाहिये। चन्द्र ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पश्चिमोत्तर दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक जलाकर प्रतिदिन या सोमवार और बृहस्पतिवार को अवश्य करना चाहिये। चन्द्र ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए चन्द्र ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी पलाश (ढ़ाक) या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ इमं देवा असपत्न ग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकम्ब्राह्मणाना ग्वं राजा।।

पौराणिक मंत्र

ऊँ दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्।

नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम्।।

ध्यान मंत्र

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।

गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी।।

चन्द्रमा का गायत्री मंत्र

ऊँ क्षीर पुत्राय विद्‌महे

कलारूपाय धीमहि।

तन्नोः सोमः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्राय नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

ऊँ श्रीं कीं चं चन्द्राय नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ सों सोमाय नमः।

श्री बिठ्ठल शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं एक या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से संध्याकाल में करना चाहिये।